दिव्य लीलामृत

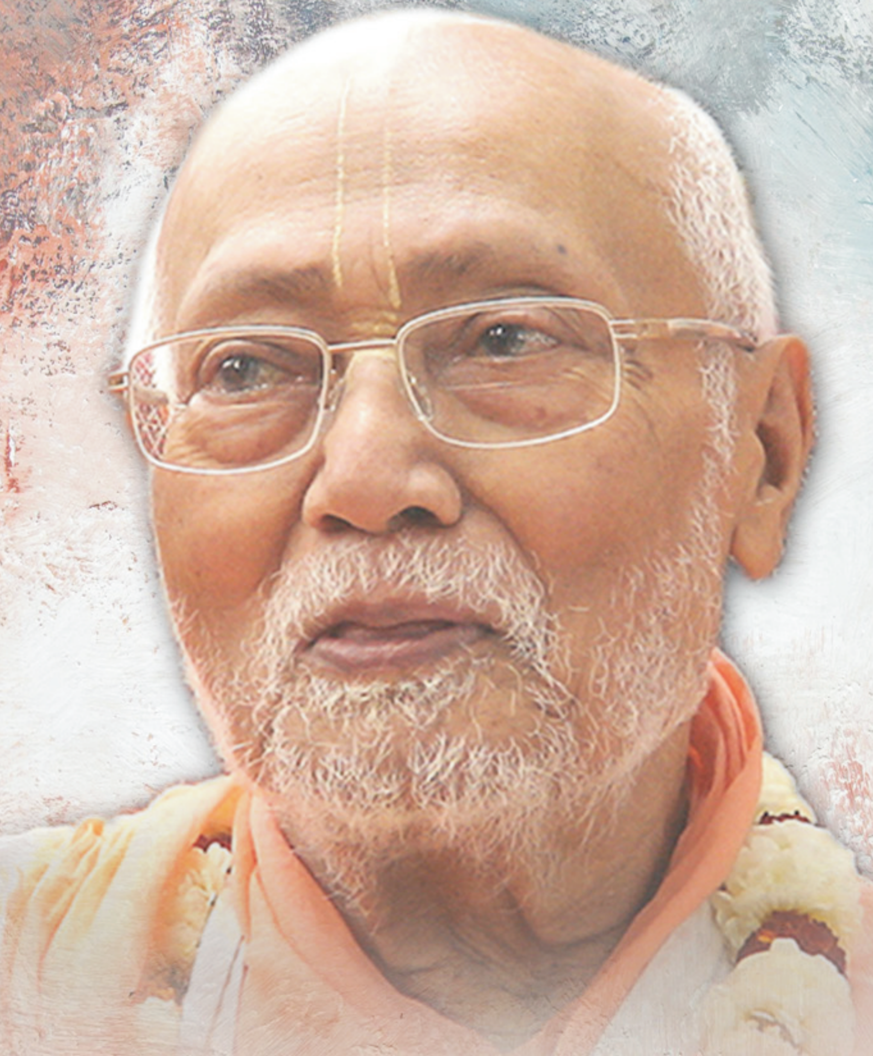

एक उत्तम प्रशासक

श्रीश्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज जी

SGD

श्रीलगुरुदेव

SGD

बठिंडा में कुछ दिनों के प्रचार के बाद, श्रील गुरुदेव ने मानसा में पदार्पण किया। 16 अक्टूबर, 2010 को लुधियाना में उनका शुभ-आगमन हुआ। परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विज्ञान भारती महाराज और परम-पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति सर्वस्व निष्किंचन महाराज जैसे कुछ विशिष्ट संन्यासी भी वहाँ पधारे। श्रील गुरुदेव की दिव्य उपस्थिति में कार्तिक व्रत का पालन करने के लिए देश और

विदेश से भक्त वहाँ आए थे। श्रील गुरुदेव ने सभी विशेष तिथियों पर हरिकथा कही। कुछ अवसरों पर नगर-संकीर्तन में भाग लेकर भक्तों पर विशेष अनुग्रह किया। कुछ दिनों के बाद, उन्होंने अमृतसर में रहने वाले उनके एकमात्र गुरु-भाई, श्रीखैरातिराम गुलाटी, से मिलने के लिए वहाँ शुभ पदार्पण किया।

कार्तिक व्रत के अंतिम कुछ दिनों में, श्रील गुरुदेव ने गुवाहाटी की यात्रा की। उनके गुवाहाटी आगमन पर वहाँ के

भक्तों ने अत्यंत उल्लास के साथ उनका भव्य स्वागत किया। मठ में प्रत्येक दिन उत्सव होने लगा। उत्थान एकादशी तिथि–कार्तिक व्रत का अंतिम दिवस एवं परम–आराध्यतम श्रील परमगुरुदेव की शुभ आविर्भाव तिथि है। उस दिन हरिकथा में, श्रील गुरुदेव ने श्रील परमगुरुदेव की महिमा गान करते हुए कहा, "हमारे गुरुदेव कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने बहुत से असाधारण कार्यों को सफलता पूर्वक पूरा किया। वैसे तो, उनका

बाह्य दर्शन भी अपने आप में बहुत आकर्षणीय था, क्योंकि वे आजानुलम्बित बाहु युगल संपन्न थे, आकार में उनका शरीर सुदीर्घ था जिसकी प्रभा पिघले हुए सोने जैसी थी। उनका व्यवहार अत्यंत मधुर था। आधुनिक युक्ति और शास्त्र प्रमाणों के द्वारा दूसरों को समझाने की उनकी अद्‌भुत क्षमता को तो अद्वितीय कहना ही होगा। इन सब दिव्य गुणों से वशीभूत होकर समाज के बड़े-बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उन्हें संतुष्ट करने के लिए नाना प्रकार के

प्रयास कर अपने आपको धन्यातिधन्य समझते थे। श्रील प्रभुपाद के सेवा-कार्यों को सुन्दर भाव से परिपूर्ण करने के लिए जिस प्रकार से वे आहार और निद्रा पर भी ध्यान नहीं देकर दिन-रात अथक प्रयास करते थे, आधुनिक युग की समाज सेवी संस्थाएं उसकी कल्पना भी नहीं कर सकती हैं। चंडीगढ़ शहर के एक प्रमुख स्थान के पार्क के मध्य में, श्रीपुरुषोत्तम धाम में श्रील प्रभुपाद के जन्म स्थान पर, एवं अगरतला श्रीजगन्नाथ मंदिर में मठों की

स्थापना जैसे उनके अनेक असाध्य कार्यों ने श्रील प्रभुपाद के कई शिष्यों को आश्चर्यचकित कर दिया।"

कार्तिक व्रत का अनुष्ठान समाप्त होने के बाद, श्रील गुरुदेव ग्वालपाड़ा पहुँचे। मठ से लगभग दो मील की दूरी पर अतिथिगृह (guesthouse) और धर्मार्थ

औषधालय (charitable dispensary) है। 23 नवंबर की सुबह, सुंदर परिदृश्यमान ग्वालपाड़ा नगर की गलियों से होते हुए हम कार से वहाँ पहुँचे। वहाँ का दृश्य लज्जाजनक था–प्रवेश द्वार को जंग लगा हुआ था एवं वहाँ ऊँची जंगली घास और लताओं के उगने के कारण अंदर जाने का रास्ता पूरी तरह से बंद हो चुका था। ऐसा लग रहा था कि लम्बे समय से उस स्थान की देखरेख पर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया।

श्रील गुरुदेव ने क्रोध प्रदर्शन करते हुए जोर से कहा, “ताला तोड़ दो ! मठ की संपत्ति के प्रति ऐसी लापरवाही ठीक नहीं है। मुझ पर बहुत विश्वास करते हुए, एक व्यक्ति ने हमारे मठ को यह स्थान सेवा में दिया है। मैं इसे ऐसे नष्ट नहीं होने दूँगा। सारभोग से लौटने के बाद में दो दिन यहीं रहूँगा। ” इतना कहकर, वे वहाँ से चल पड़े। रास्ते में, उन्होंने जोर देते हुए हमें समझाया कि भगवान् की सेवा के लिए दान में मिली हुई किसी भी संपत्ति के उचित

देखरेख और संरक्षण के लिए हमें सब समय प्रयासरत रहना चाहिए। मठ पहुँचने के तुरंत बाद, उन्होंने श्रीमद् भक्ति प्रपन्न तपस्वी महाराज को अतिथिगृह की और श्रीअनिरुद्ध प्रभु को औषधालय की देखरेख का दायित्व सौंप दिया। उस दिन दोपहर को, श्रील गुरुदेव सारभोग श्रीगौड़ीय मठ के लिए रवाना हुए।

सारभोग में, सन् 1936 में श्रील प्रभुपाद के द्वारा प्रकाशित श्री श्रीगुरुगौरांग- गांधर्विका-

गिरिधारीजी के अति सुन्दर विग्रह हैं। उनकी पुष्प–समाधि एवं श्रील परमगुरुदेव की दन्त– समाधि उस मठ की एक और शोभा है। आसामी लोगों के सरल स्वभाव और साधुओं के प्रति उनकी श्रद्धा को देखकर श्रील प्रभुपाद ने कहा था कि वे प्रत्येक वर्ष वहाँ जाएंगे। उन्होंने श्रील परमगुरुदेव को वहाँ प्रचार करने का आदेश भी दिया था, किन्तु उसी वर्ष के अंत में उन्होंने नित्यलीला में प्रवेश किया। उनकी इच्छा और आदेश को पालन करते हुए, श्रील

परमगुरुदेव ने आसाम में विपुल प्रचार किया और श्रील प्रभुपाद की व्यास-पूजा के अवसर पर प्रत्येक वर्ष सारभोग श्रीगौड़ीय मठ जाते रहे। श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के भक्त आज भी उस प्रथा का पालन करते आ रहे हैं।

श्रील गुरुदेव सारभोग आए। उन दिनों, मठ के चारों ओर ऊँची दीवार का निर्माण कार्य चल रहा था ताकि उस स्थान को चोरों से और भूमि का अतिक्रमण करने वालों से सुरक्षित रख सकें।

लगभग चार महीनों से श्रील गुरुदेव इच्छा व्यक्त कर रहे थे कि वे वहाँ जाकर निर्माण कार्य का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण करेंगे। किन्तु प्रचार कार्यों में उनकी व्यस्तता के कारण वे वहाँ नहीं जा पाए, हालाँकि उस निर्माण कार्य के लिए वे धनराशि (funds) लगातार भेजते रहते थे।

अगले दिन, श्रील गुरुदेव सारभोग में निर्माण कार्य का निरीक्षण करने लगे। परम-पूज्यपाद श्रील भक्ति

भूषण भागवत महाराज की देखरेख में वह कार्य चल रहा था। उन्होंने श्रील गुरुदेव को कार्य की प्रगति के बारे में जानकारी दी और आश्वासन दिया कि वे व्यक्तिगत रूप से वहाँ के निर्माण कार्य की देखरेख करेंगे। उन्होंने श्रील गुरुदेव से अनुरोध किया कि वे इस ओर से निश्चिंत होकर अपने प्रचार और अन्य संस्था-संबंधी कार्यों पर ध्यान दे सकते हैं। श्रील गुरुदेव ने निर्माण सेवा के लिए बहुत धनराशि दी । उस दिन रात्रि के समय, उन्होंने हरिकथा में

विशेष जोर देते हुए कहा कि यदि हम वास्तविकता में हरिभजन करना चाहते हैं, तो हमें अपने आचरण को सुधारना होगा और दूसरों में दोष ढूंढ़ने की प्रवृत्ति से बचना होगा। उन्होंने श्रील प्रभुपाद द्वारा लिखित 'वैष्णव के' गीति की विस्तार से व्याख्या भी की।

अगले दिन श्रील गुरुदेव ग्वालपाड़ा लौट आए। उन्हें शीघ्र ही अतिथि-निवास का निरीक्षण करने जाना था, क्योंकि उन्हें उस स्थान के दृश्य स्मरण थे। पिछले

2-3 दिनों में स्थानीय भक्तों ने उस स्थान की घास को समान रूप से काटकर, झाड़ियों को हटाकर प्रवेश-मार्ग को खुला कर दिया। उन्होंने कमरों को भी अच्छी तरह से सफाई कर दीवारों पर रंग कर दिया। 26 नवंबर को, श्रील गुरुदेव के उस स्थान पर जाने से पूर्व ही, सुबह कुछ सेवक, अन्य कुछ भक्तों के साथ, वहाँ गए और जो कुछ सामान्य सफाई कार्य बाकी था उसको पूर्ण कर उस स्थान को श्रील गुरुदेव के आगमन के लिए तैयार कर दिया।

श्रील गुरुदेव उस स्थान पर गए और उसे स्वच्छ और सुन्दर देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "हमें दाताओं के विश्वास को तोड़ना नहीं चाहिए, इसलिए इस स्थान की देखभाल अच्छे से कीजिए।" उन्होंने अतिथि-निवास और औषधालय के प्रत्येक कमरे का निरीक्षण किया और आसपास के खुले मैदान में थोड़ी देर भ्रमण भी किया। उसके बाद, वे औषधालय के अंदर जाकर एक कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने कहा, "अभी संकीर्तन कीजिए।

उसके बाद भगवद् प्रसाद का वितरण किया जाएगा।" भक्तों के द्वारा उच्च स्वर से संकीर्तन करने के बाद खिचड़ी और मीठे प्रसाद का वितरण किया गया। उस घटना के बाद से, उस स्थान की देखरेख आज तक ठीक तरह से की जा रही है।

श्रील गुरुदेव एक निपुण प्रशासक और आदर्श मार्गदर्शक थे। जो स्थान कुछ वर्षों से उपेक्षित पड़ा था, वह उनके द्वारा क्रोध-लीला का प्रदर्शन करने पर, मात्र दो ही दिनों में स्वच्छ

और सुन्दर हो गया। मठ की संपत्ति की ठीक से देखरेख करने के प्रति भक्तों की उदासीन प्रवृत्ति को सुधारने के लिए ही उन्होंने क्रोध को सेवा में नियोजित किया। शुद्ध भक्तों का क्रोध जीवों के चरम मंगल के लिए ही होता है। साधारणतः भक्त क्रोधित नहीं होते हैं, किन्तु कभी-कभी वे इस प्रकार की लीला का प्रदर्शन करते हैं, ताकि बद्ध जीव निरंतर भगवान् की सेवा में कार्यरत रहे।

Play Store

SrilaGurudeva

SGD